Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 6, October-2021, ISSN 2230-7540

# पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक व्यवस्था एवं आचार संहिता का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

**Vibha Mishra[1]* Dr. S. K. Mahto[2]**

[1] Research Scholar, Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan

[2] Investigator Supervisor, Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan

***सार –*** *मालवीयजी की मान्यता थी कि विद्यार्थियों का चरित्रगठन शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य है। शिक्षा के माध्यम से वह राष्ट्रीय चेतना का एकीकरण और नवनिर्माण करना चाहते थे। वह स्त्री-शिक्षा के माध्यम से आने वाली भावी पीढ़ी की संततियों का इस प्रकार निर्माण चाहते थे, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान से युक्त हो। वह शिक्षा के माध्यम से भारत में ऐसे व्यक्ति के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ ही साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह इस योग्य हो कि अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिए दर-दर की ठोकरें न खानी पड़ें। मालवीयजी के अनुसार यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक है। महामना के कार्यों की मूल परिकल्पना इसी प्रवृत्ति के कारण उपजी। उन्होंने विशेष रूप से भारत वर्ष की सांस्कृतिक धरोहर की तरफ देखा, उसके गौरवमय इतिहास से प्रेरणा ग्रहण कीऔर भारतीयों के प्रति अनुराग की भावना जगाने का सदैव कार्य किया। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर भारतीय भाषाओं को विकसित करने तथा संस्कृत के अधिकाधिक प्रयोग पर विशेष जोर दिया। महामना शिक्षा को सभी सुविधाओं का मूलाधार समझते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका कार्य अवश्य ही बहुत महत्वपूर्ण था। शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार परिपक्व, उदात्त और परिपूर्ण है। उनके उपदेशों का अनुसरण करके शिक्षक और विद्यार्थी अपने जीवन को अवश्य ही काफी ऊँचा उठा सकते है, तथा पारस्परिक वैमनस्य का निराकरण कर एक स्वस्थ सौहार्द्रपूर्ण वातावरण प्रतिष्ठित कर सकते हैं।*

***कुंजीशब्द –*** *मालवीय, शैक्षिक व्यवस्था, आचार संहिता*

----------X----------

## प्रस्तावना

महामना मालवीय जी ने अपने मुख से कहा है कि मैं कोई शिक्षाशास्त्री नहीं हूँ। परन्तु क्या यह सत्य है? जो व्यक्ति काशी विश्वविद्यालय का प्राण था उसे शिक्षाशास्त्री न कहा जावे। यह ठीक है कि वह शिक्षाशास्त्र को बारीकियों एवं सिद्धान्तों तथा शिक्षण के सूत्रों तथा विधियों के अधिष्ठाता न थे परन्तु इतना तो अवश्य ही सबको मानना पड़ेगा कि जिस विलक्षण दूरदर्शिता, शक्ति एवं सूझ से उन्होंने शिक्षा की योजना एवं विश्वविद्यालय की प्रायोजना तैयार की थी, वह किसी एक महान् शिक्षाशास्त्री के ही बूते का काम है। अतः यदि शिक्षा केवल विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढाई जाने वाली चीज है तो उसका पाठयक्रम तथा उसकी विधि जरूर मालवीयजी ने नहीं तैयार की।

उस स्थान की नींव डाली, भवन तैयार किया, वातावरण, सुविधाएँ संयोजित और प्रदान की जिसके फलस्वरूप उसमें शिक्षा-दीक्षा लेने वाले अपना विकास एवं ज्ञानवर्द्धन कर सकते। शिक्षाशास्त्री का काम केवल शिक्षालय में पढ़ाना एवं विधि तथा पाठ्यक्रम तैयार करना ही नहीं है प्रत्युत सबसे बड़ा काम तो समाज एवं राष्ट्र के लिये योजना एवं योजना को कार्यान्वित एवं सफलीभूत करने के लिये हर प्रकार की सुविधाएँ जुटाना भी है। शायद यह कार्य प्रथम कार्य की अपेक्षा गुरुतर एवं अधिक ठोस तथा उपयोगी है और इस कार्य को पूरा किया है मालवीय जी महाराज ने।

मालवीयजी की मान्यता थी कि विद्यार्थियों का चरित्रगठन शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य है। शिक्षा के माध्यम से वह राष्ट्रीय चेतना का एकीकरण और नवनिर्माण करना चाहते थे। वह स्त्री-शिक्षा के माध्यम से आने वाली भावी पीढ़ी की संततियों

www.ignited.in

का इस प्रकार निर्माण चाहते थे, जो प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान से युक्त हो। वह शिक्षा के माध्यम से भारत में ऐसे व्यक्ति के निर्माण के पक्षपाती थे, जो चरित्रवान होने के साथ ही साथ आर्थिक, प्राविधिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक ज्ञान से परिपूर्ण हो। वह इस योग्य हो कि अपनी जीविका प्राप्त करने की सामर्थ्य रखता हो। उसे जीविका प्राप्त करने के लिए दर-दर की ठोकरें न खानी पड़ें। मालवीयजी के अनुसार यदि शिक्षा द्वारा इस प्रकार के व्यक्ति का निर्माण नहीं होता तो वह शिक्षा निरर्थक है।

उन्होंने अपने विश्वविद्यालय में आधुनिक वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा-व्यवस्था के माध्यम से ऐसा प्रयास करना चाहा था, जिससे उनकी उक्त व्यवस्था लागू हो सके। इंजीनियरिंग उपकरण, कृषि फार्म, डेयरी फार्म तथा आधुनिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के उत्पादन के साथ ही साबुन आदि आवश्यक वस्तुओं का अधिकाधिक उत्पादन करके, छात्रों तथा विश्वविद्यालयों के माध्यम से वह देश और समाज की आवश्यकता की सामग्रियों की आपूर्ति भी करना चाहते थे। उनके अनुसार- इस प्रकार की व्यवस्था से अध्ययन करने वाले छात्रों में उत्पादन और आपूर्ति की व्यवस्था द्वारा आत्मबल का विकास होगा और युवक यहीं से अपने पैरों पर खड़ा होना सीख सकेगा।

### शिक्षा का अर्थ

मालवीय जी ने शिक्षा की कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी है। शैक्षिक विचारों का मूर्तरूप हिन्दू विश्वविद्यालय उनके शिक्षा के विभिन्न पक्षों की स्वतः व्याख्या करता है। चूंकि वे एक शिक्षक थे। इसलिए उनके विचार से विद्यालय से प्राप्त शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति के विभिन्न पक्षों का विकास सम्भव है। हाँ, उन्होंने इस बात को अवश्य ही कहा है कि शिक्षा साध्य हेतु साधन है। साध्य का पक्ष क्या? यह मानव विवेक, उत्साह तथा आस्तिकता पर निर्भर है।

### चारित्रिक विकास

संस्कृत भाषा की शिक्षा के दो लक्ष्य मालवीय जी ने बताये हैं- धर्म का विश्वास एवं चरित्र का विकास। वह प्राचीन परम्परावादी थे और प्राचीन धर्म में विश्वास करते थे। इसीलिये उन्होंने आश्रम धर्म की ओर जोर दिया, जीवन के चार आश्रम बताये जो प्राचीन धर्म के अनुसार हैं। इन आश्रमों में प्रत्येक व्यक्ति का जो कर्त्तव्य है उसे पालन करना शिक्षा है, अस्तु यह आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को उचित और अनुचित आचरण का ज्ञान दिया जाये तथा वह अपने चरित्र को ऊँचा उठावे। यह बात मालवीय जी के निर्भीक, सात्विक एवं उदार आचरण एवं व्यवहार से स्पष्ट है। इसीलिये वह अपने सभी छात्रों से यही कहते थे कि चरित्र ऊँचा उठाओ, ब्रह्मचर्य का पालन करो। उन्होंने लिखा है कि ब्रह्मचर्यश्रम के जिन विद्यार्थियों के चरित्र निष्कलंक पाये जायेंगे तथा जो निश्चित पाठ्यक्रम समाप्त कर लेगें वे स्नातक पद पाने के अधिकारी समझे जायेंगे।

### राष्ट्रीय भावना का विकास

मालवीय जी के अनुसार भारतीय राष्ट्रीयता का मूल आधार हिन्दुत्व है। हिन्दुत्व से मालवीय जी का बड़ा विस्तृत अर्थ था। इनके अनुसार हिन्दुत्व भारत के धर्म-दर्शन का नाम है. एक ऐसे धर्म-दर्शन का नाम जो प्राणी मात्र के कल्याण में विश्वास करता है, एक ऐसे धर्म-दर्शन का नाम जो शाश्वत है। इन्होंने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि भारत में हिन्दुत्व के अभाव में राष्ट्रीयता की कल्पना ही नहीं की जा सकती। इन्होंने स्पष्ट किया कि हमारा धर्म-दर्शन किसी से द्वेष करना नहीं सिखाता, यह तो विश्व को एक कुटुम्ब मानता है, यह केवल देशवासियों के कल्याण की बात नहीं करता अपितु विश्व कल्याण में विश्वास करता है। इन्होंने आगे स्पष्ट किया कि यही हमारी राष्ट्र की वास्तविक पहचान है, यही हमारे राष्ट्र की मूल धरोहर है। साफ जाहिर कि मालवीय जी संकुचित राष्ट्रीयता (राष्ट्रवाद) के पक्षधर नहीं थे, ये तो वसुधैव कुटुम्बकम् के पोषक थे। ये शिक्षा द्वारा इसी राष्ट्रीयता की सुरक्षा पर बल देते थे।

### शिक्षक एवं शिक्षार्थी

**शिक्षक –** मालवीय जी ने अपना जीवन शिक्षक के रूप में प्रारम्भ किया था। ये प्राचीन परम्परा के अनुयायी थे और शिक्षकों को समाज में सर्वोच्च स्थान देते थे। इनके अनुसार शिक्षक को धर्म परायण, विद्वान और सत्यानुषी होना चाहिए और शिक्षार्थियों के प्रति समर्पित होना चाहिए। इसके साथ-साथ प्रत्येक शिक्षक का आचरण आदर्श और अनुकरणीय होना चाहिए। ये शिक्षकों से यह भी अपेक्षा करते थे कि वे समाज सेवक और राष्ट्र भक्त हों। इनका विश्वास था कि ऐसे शिक्षकों से ही शिक्षार्थी सच्चे ज्ञान और उच्च आचरण की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

### विद्यार्थी

मालवीय जी शिक्षार्थियों से ब्रह्मचर्य पालन की अपेक्षा करते थे। ये अपने शिष्यों को प्रातःकाल उठने, नित्य संध्यावन्दन करने, बड़ों का आदर करने, शिक्षकों में श्रद्धा रखने और उनकी आज्ञा का पालन करने और प्राणीमात्र की सेवा करने का उपदेश देते थे। इनके अनुसार विद्यार्थियों को अपने मन, वचन और कर्म पर संयम रखना चाहिए, विनम्र होना चाहिए. सादा जीवन जीना चाहिए और विद्या से प्रेम करना चाहिए। ये भारत में

www.ignited.in

प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा को पुनः स्थापित करना चाहते थे। विद्यार्थी को भी मालवीय जी आदर्श रूप में बनाना चाहते थे। वह विद्यार्थियों से कहते थे कि ब्रह्मचर्य का आजीवन पालन करो, सुबह-शाम संध्या वन्दन करो, ईश्वर से प्रार्थना करो, माता-पिता-गुरु तथा प्राणी मात्र की सेवा करो, सत्य बोलो, व्यायाम करो, विद्या पढो, देश सेवा करो और जगत् में सम्मान प्राप्त करो। उनका कहना था कि यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें ईश्वर का निवास है।

**स्त्री शिक्षा –** मालवीय जी उच्च शिक्षा के पक्षपाती थे। समाजोत्थान में वे स्त्रियों का विशेष अनुदान मानते थे। उन्होंने अपने स्त्री शिक्षा नामक लेख में (मार्ग शीर्ष शुक्ल 29. सं. 1963) बड़े ही शक्तिशाली शब्दों में अपने विचार व्यक्त किये। उन लोगों का खण्डन किया जो उच्च स्त्री-शिक्षा के विरोधी हैं यथा शिजस शिक्षा द्वारा पुरुषों में मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का प्रकाश होता है, जिसकी सहायता से उनका जीवन उच्च हो जाता है उसी शिक्षा को पाकर स्त्रियों के मन और हृदय उन्नत न होकर अधोगति की ओर आकर्षित होंगे। यह कैसी आश्चर्य की बात है। जो शिक्षा पुरुषों को प्रकाश की ओर ले जाती है वही स्त्रियों को अन्धकार की ओर घसीट ले जायेगी। यह कहाँ का विचित्र न्याय है।ष्

जब तक हम इस (स्त्री) वर्ग को अपने साथ लेकर नहीं चलते तब तक हम सभी जातीय जीवन की लहलहाती हुई लता को देखकर आनन्दित नहीं हो सकते, क्योंकि मनुष्य समाज का कल्याण अथवा अकल्याण, उच्य अथवा नीच होना स्त्रियों के ही हाथ में है।

## अध्ययन के उद्देश्य

1. पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करना।

2. पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक आचार संहिताओं का अध्ययन करना।

## शोध अध्ययन की प्रकृति, विधि व स्त्रोत

वर्तमान शोध कार्य पुस्तकीय संदर्भित दार्शनिक शोध विधि के अन्तर्गत आयेगा क्योंकि इसका दत्त अतीत में लिखे गये साहित्य तथा साधनों से लिया गया है, यह साहित्य दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है। प्राथमिक श्रेणी में वे साहित्य आते है जो मालवीय जी द्वारा स्वयं लिखे गये है या उनके भाषण के संकलन मात्र है जिन्हें हम दत्त का प्राथमिक स्त्रोत कह सकते है। द्वितीय श्रेणी में वे साहित्य आयेगें जो उनक सहकर्मियों या उनके सम्बन्ध में विशेष रूचि रखने वालो द्वारा लिखे गये है। इस प्रकार के साहित्य को दत्त का द्वितीय स्त्रोत माना जा सकता है। शोध की दृष्टि से उपयुक्त दोनो स्त्रोतों की प्रमाणिकता अत्यधिक विश्वसनीयता है। मुख्य रूप से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को शोध का आधार बनाया गया है जिनकी प्रमाणिकता के विषय में सन्देह नहीं किया जा सकता है।

## पं. मदन मोहन मालवीय शैक्षिक व्यवस्था एवं आचार संहिता

हिन्दू धर्म-दर्शन का विवेचन करना आसान नहीं है। शोध की दृष्टि से इसका विवेचन और विश्लेषण तो और भी अधिक कठिन जान पड़ता है। यह केवल हिन्दू धर्म के विषय में ही नहीं अपितु दुनिया के किसी भी धर्म के विवेचन के बारे में ऐसा कहा जा सकता है। हिन्दू धर्म भारत वर्ष की प्राण शक्ति है और भारत वर्ष दुनिया में हर एक को किसी न किसी रूप में आकर्षित करता है। ऐसा इसलिए नहीं कि यह धर्म अत्यन्त श्रेष्ठ और सभी धर्मों के उपर बतलाने जैसी बात है बल्कि इसलिए कि संसार के सभी भागों से लोग यहाँ आये और इस देश की धार्मिक भावना से कुछ न कुछ सीखा। इसकी कुछ दुर्बलताओ एवं त्रुटियों की ओर भी ध्यान गया। यही एक बिन्दु है जहाँ से सनातन हिन्दू धर्म की व्याख्या की नयी यात्रा शुरू होती है। किन्हीं कारणों से मन्द पड़ी हिन्दू धर्म के प्रवाह को उन्नीसवीं शताब्दी में तीव्र गति प्रदान करने हेतु धार्मिक आन्दोलनों के रूप में अनेक विचार धारायें प्रस्फुटित हुई।

## सैन्ट्रल हिन्दू स्कूल

जुलाई 1898 में प्रख्यात स्वतंत्रता-सेनानी एनी बेसेंट द्वारा स्थापित, डॉ आर्थर रिचर्डसन के साथ, प्रिंसिपल के रूप में विज्ञान स्नातक, बाद में एनी बेसेंट ने इस स्कूल को पं मदन मोहन मालवीय को समर्पित किया। मदन मोहन मालवीय, इस स्कूल का प्रशासन अब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की जिम्मेदारी है और संस्थान बनारस हिंदू विश्वविद्यालय का केंद्र बन गया, जिसे 1916 में स्थापित किया गया था। एशिया का पहला शैक्षिक सम्मेलन ग्राउंड में आयोजित किया गया था। CHBS भारतीय रियासत बनारस राज्य के शासक (रॉयल हाउस ऑफ बनारस) प्रभु नारायण सिंह ने स्कूल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और स्कूल के लिए अपेक्षित जमीन दान की।

यह विद्यालय बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के लिए एक ऋणदाता के रूप में स्नातक कक्षाओं में चला था, जिसकी

स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा की गई थी और अभी भी निर्माणाधीन है। केंद्रीय हिंदू कॉलेज का प्रभार 27 नवंबर 1915 को हिंदू विश्वविद्यालय सोसायटी को सौंप दिया गया था। सरकार द्वारा जारी एक अधिसूचना द्वारा, अक्टूबर 1917 में, केंद्रीय हिंदू कॉलेज नवगठित विश्वविद्यालय का एक घटक कॉलेज बन गया।, सयाजी राव गायकवाड़ लाइब्रेरी (केन्द्रीय पुस्तकालय), बीएचयू पहले 1917 में कॉलेज के तेलंग लाइब्रेरी में रखे था।

प्रसिद्ध धर्मशास्त्री, जॉर्ज अरुंडेल 1917 में एक इतिहास शिक्षक के रूप में स्कूल में शामिल हुए, और बाद में स्कूल के प्रमुख बने। यह वाराणसी के सबसे पुराने स्कूल में से एक है। सीएचबीएस का पूर्वांचल में सबसे लंबा खेल का मैदान है जहां फुटबॉल टूर्नामेंट वाराणसी के कई कॉलेजों द्वारा खेला जाता है। सीएचबीएस में एक सरगा हॉल है जो सबसे लंबे हॉल में से एक है। एक ऐतिहासिक पुस्तकालय है, जिसे 1912 में स्थापित किया गया था और काशीनाथ त्र्यंबक तेलंग पुस्तकालय के रूप में जाना जाता था। सयाजी राव गायकवाड़ पुस्तकालय, बीएचयू को पहली बार 1917 में कॉलेज की तेलंग लाइब्रेरी में रखा गया था। इस पुस्तकालय में विश्वकोश जैसी 30,000 से अधिक पुस्तकें हैं। कई पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, और डिजीस्ट के अलावा विभिन्न विषयों पर उपन्यास, पुरानी किताबें। गणित और विज्ञान में विशेष जागरूकता पैदा करने के लिए स्कूल रामानुजन मेमोरियल गणित प्रतियोगिता और सर C. V. Raman का आयोजन कर रहा है 1988 से विज्ञान प्रश्नोत्तरी।

## हिन्दू विश्वविद्यालय

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की सृष्टि है। इसका निर्माण, मातृभूमि की सेवा में किये गये मालवीय जी के कार्यों में सर्वश्रेष्ठ, काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना मालवीय जी के महानतम कार्यों में गिना जाता है। मालवीय जी का पूरा जीवन देश के लिए समर्पित रहा है, समाज, धर्म, राजनीति सभी पर अपनी छाप छोड़ी है, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, राष्ट्रीय आन्दोलन में उनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है, किन्तु इन सभी कार्यों में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना का अपना अलग स्थान है। मालवीय जी देश की एकता में विश्वास रखते थे। इसके लिए अर्न्तप्रान्तीय एकता, एक राष्ट्रभाषा, एक जातीयता, स्वदेश भक्ति, भारतीय कलाओं की उन्नति. औद्योगिकीकरण के लिए विशेष वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा, गरीबों को भी शिक्षा प्राप्त कर ऊँचा उठा सकने का अवसर, कृषि तथा फौजी शिक्षा और सर्वोपरि आत्माभिमान तथा चरित्र निर्माण के लिए स्वधर्म में आस्था, यही देश की महान आवश्यकताएँ तब भी थीं और आज भी हैं। काशी विश्वविद्यालय में इन सभी बातों को एक साथ देखा जा सकता है। वस्तुतः हिन्दू विश्वविद्यालय मालवीय जी के सपनों के भारत का एक छोटा सा सफल, सचल तथा स्थूल चित्र है।

## काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रारूप

पं. मालवीय जी के समक्ष इस विश्वविद्यालय के लिए अगला सवाल इसके स्थान एवं आवास के स्वरूप का था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एक सार्वदेशिक रूप लेकर उत्पन्न हुआ था और यह एक आवासीय शिक्षण विश्वविद्यालय है। आवासीय का क्या अर्थ है? एक आवासीय एवं शिक्षण विश्वविद्यालय का उद्देश्य सिर्फ बौद्धिक उपलब्धियाँ अर्जित करना नहीं होता, जैसा कि पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों का है। यह सामूहिकता की भावना उत्पन्न करने वाली एक जीवन-पद्धति है, यह पारिवारिक जीवन जीने का एक प्रशिक्षण-स्थल है। यहाँ न कोई छोटा होता न बड़ा सब कुछ स्व-विवेक पर निर्भर करता है।

## आदर्श काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय ने की थी। स्नेह और सम्मानपूर्वक सभी उन्हें महामना भी कहते थे। यह विश्वविद्यालय मालवीय जी का स्वप्न था। वे भारत के विद्यार्थियों को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही तरह की शिक्षा पद्धतियों में दक्ष देखना चाहते थे। उनका यही स्वप्न काशी हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण का बीज था, जिसे उन्होंने अपने अदम्य इच्छा, स्नेह और कठोर श्रम से विशाल वृक्ष में परिवर्तित कर दिया। इस वृक्ष की ज्ञान शाखा चारो तरफ फैली हुई है और आज भी निरंतर फैल रही है। काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट, एक्ट क्रमांक 16, सन् 1915 के अंतर्गत हुई थी। विश्वविद्यालय की स्थापना 04 फरवरी 1916 को की गई थी। यह तिथि बसंत पंचमी की थी, तब से यह विश्वविद्यालय हर साल बसंत पंचमी को ही अपना स्थापना दिवस मनाता है। आज काशी हिंदू विश्वविद्यालय अपना 105 वां स्थापना दिवस मना रहा है। वास्तव में, यह विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान एवं आधुनिक वैज्ञानिक चिन्तन दृष्टि का संगम है। आज सम्पूर्ण विश्व में महामना की बगिया कहे जाने वाले काशी हिंदू विश्वविद्यालय से निकले छात्र फैले हुए हैं और विश्वविद्यालय की गौरवशाली विरासत को संजोए हुए हैं। हर वर्ष स्थापना दिवस पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में समारोह का आयोजन होता है।

www.ignited.in

## वर्तमान परिप्रेक्ष्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वर्तमान समय में सर्व विद्या की राजधानी माना जाता है। ज्ञान के समुचित प्रचार - प्रसार के लिए चेतना को पूर्ण प्रबुद्ध बनाने के लिए यहाँ बहुविध प्रयास किया जाता है। यह विश्वविद्यालय ईंट-गारे से बनी इमारतों का प्रतिरूप मात्र नहीः एक महाज्ञानी की अद्वितीय परिकल्पना है, जो इस वास्तविक उत्सव में हम सभी को चेतना में सरस माधुर्य भाव का आलोडन कर रही है। सदाचार, साधना और ज्ञान - भक्ति का संतुलित अमृत कोष है यह ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय, सरस्वती पुत्रों का विशाल परिवार है यह विश्वविद्यालय। यह विश्वविद्यालय भी अन्य संस्थानों की तरह तामसी संघर्ष के प्रभाव से अछूता नही रह पाया है, लेकिन घबराने की कोई बात नहीं। कोई भी विघटन स्व शाश्वत नही होता। ज्ञान की वर्तिका निष्कंप जले, इसके लिए ही व्रत साधना करना होगा, देशज भाषा में देश सेवा का व्रत, नियतिमान का कवच, सत्य का साहस और सदाशयता की अमृतधारा भीतर प्रवाहित हो, यही महामना के तप को निस्संदेह एक नई सिद्धि प्राप्त होगी।

धर्म प्रचार और धर्म की रक्षा के लिए पूरे देश में लोग बहुविध प्रयत्न कर रहे हैं, लेकिन विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए, संस्कारों के उन्नयन के लिए तथा संस्कृति की रक्षा के लिए कहीं से भी कोई उपाय दृष्टिगत नहीं होता। हर्ष की बात है कि पंजाब सूबे में संस्कृत पाठशाला, माध्यमिक विद्यालय, उच्च विद्यालय, कन्या विद्यालय, गुरूकूल आदि की स्थापना के विषय में खूब जोश देखा जा रहा है, लेकिन आवश्यकता है ऐसे विश्वविद्यालय की जिसके विशाल परीसर में सनातन विद्या के साथ - साथ अर्वाचीन विद्या का केन्द्र स्थापित किया जाए और देश भर के विद्या - व्यसनी युवक अपने शील - संस्कारों की रक्षा में सन्नद्ध वहाँ रहकर ज्ञान प्राप्त कर सके। भारतीय प्राच्य विद्या को पुनरूज्जीवन देने के लिए ऐसे महती संस्थान की प्रबल आवश्यकता है, जहाँ प्राच्य विद्या के साथ पश्चिमी ज्ञान - विज्ञान के आधुनिक विषयों के पढाई की भी व्यवस्था हो ताकि हमारे नवयुवक दुनिया के नवीन ज्ञान पद्धति से सुपरिचित हो सके। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय उपरोक्त कसौटियों पर खडा उतरता हुआ दीख रहा है। आज इस विश्वविद्यालय में नये -नये प्राच्य और अर्वाचीन विषयों में अध्ययन के साथ उत्तरोत्तर अनुसंधान कार्य को बढावा दिया जा रहा है जिससे देश ही नही अपितु विदेशों के विद्यार्थी और शोद्यार्थी लाभान्वित हो रहे है।

विश्वविद्यालय के नींव पूजन समारोह में उपस्थित जनसभा को सम्बोधित करते हुए पं. मदन मोहन मालवीय जी नें कहा था 'कुल चार वर्षों की लगातार मेहनत के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को स्वप्न काशी नरेश की महती कृपा से प्रदत्त इस विशाल भू-खंड पर साकार हुआ है। आप सभी को अच्छी तरह ज्ञात होगा कि कई बाधाएँ इस विषयक को पास कराते समय सामने आई, अनेक विरोधों का सामना करना पडा। अंततः अधिनियम बना और भोले नाथ की असीम कृपा से आज यह दिन देखने को मिला। यह विद्या धाम शिक्षा संस्कृति का अभूतपूर्व केन्द्र बने, यहाँ से राष्ट्र प्रेमी, सदाचारी, स्नातकों, परास्नातकों का निर्माण हो और देश कोने - कोने से ज्ञान की तृषां रखने वाले बटुकों का यहाँ आगमन हो। मैं चाहता हूँ कि मध्यकाल की पौडिव्य भरी काशी के दिन फिर से लौटे और यह नगर पूरे देश का ज्ञान - गोपुर बने। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के उक्त कथनों को साकार करता हुआ यह विश्वविद्यालय हिमालय की तरह तटस्थ खडा है।

## राष्ट्रहित में शैक्षिक संस्थाओं की अवधारणा

महामना मदन मोहन मालवीय शिक्षा को राष्ट्र की उन्नति का अमोघ अस्त्र मानते थे। अतः उन्होंने शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना अपने जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य बनाया। इसके लिए वे किसी से भी दान लेने में संकोच नही करते थे, पर दान के धन को शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना और विकास पर ही लगाते थे, व्यक्तिगत कार्यों हेतु नहीं। उन्होंने निम्नलिखित प्रमुख शैक्षिक संस्थाओं का निर्माण कराया। सम्पूर्ण विश्वविद्यालय 4 संस्थानों (चिकित्सा विज्ञान संस्थान, प्रौद्योगिकी संस्थान एवं कृषि विज्ञान संस्थान, पर्यावरण एवं संपोस्य विकास संस्थान), 16 संकायों (आधुनिक औषधि, आयुर्वेद, दन्त चिकित्सा, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, कृषि, पर्यावरण एवं संपोस्य विकास, कला, वाणिज्य, शिक्षा, विधि, प्रबन्ध शास्त्र, मंच कला, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, दृश्य कला), 132 विभागों, 1 महिला महाविद्यालय (वोमेन्स कॉलेज) और 5 अन्तर्विषयी स्कूलों (द्रव्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, जैव-चिकित्सकीय अभियांत्रिकी, जैव-रसायन अभियांत्रिकी, जैव-प्रौद्योगिकी व जीवन विज्ञान) से मिलकर बना है। अनेक विभाग अपने उच्च शोध उपलब्धियों के लिए उच्चीकृत किये गये हैं; इनमें 18 यूजीसी विशेष सहायता कार्यक्रम (उच्चानुशीलन केन्द्र 8, विभागीय अनुसंधान सहयोग 10), यूजीसी मान्यता प्राप्त केन्द्र/कार्यक्रम 4, अन्य कार्यक्रम 9 और डी एस टी एफ आई एस टी (विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी उन्नयन कोष) कार्यक्रम 7 सम्मिलित हैं। नगर में स्थित 4 महाविद्यालयों को का.हि.वि.वि. की सुविधाओं के लिए स्वीकृत किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा बच्चों के लिए 3 विद्यालयों का अनुरक्षण भी किया जाता है।

## निष्कर्ष

मालवीय जी ने शिक्षा के प्रसार और इसे नया स्वरूप प्रदान करने पर इतना बल इस कारण दिया क्योंकि वह इसे सांस्कृतिक जागरण का प्रधान अंश मानते थे। उन्नीसवीं सदी के अन्तिम दशकों में भारत में जो सांस्कृतिक पुनर्जागरण हो रहा था उससे मालवीय जी काफी प्रभावित हुए। उनकी वाणी में, विचारों में उस सांस्कृतिक उत्थान की झलक मिलती है, जिससे उनके युग के अनेक राष्ट्रवादी अनुप्राणित हुये थे। यह भारत में चल रहे पुनरुत्थान का काल था, जिसमें यहां के राष्ट्रनेताओं ने भारतीयो में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाने का कार्य किया। महामना के कार्यों की मूल परिकल्पना इसी प्रवृत्ति के कारण उपजी। उन्होंने विशेष रूप से भारत वर्ष की सांस्कृतिक धरोहर की तरफ देखा, उसके गौरवमय इतिहास से प्रेरणा ग्रहण की और भारतीयों के प्रति अनुराग की भावना जगाने का सदैव कार्य किया। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर भारतीय भाषाओं को विकसित करने तथा संस्कृत के अधिकाधिक प्रयोग पर विशेष जोर दिया। महामना शिक्षा को सभी सुविधाओं का मूलाधार समझते थे। शिक्षा के क्षेत्र में उनका कार्य अवश्य ही बहुत महत्वपूर्ण था। शिक्षा के सम्बन्ध में उनके विचार परिपक्व, उदात्त और परिपूर्ण है। उनके उपदेशों का अनुसरण करके शिक्षक और विद्यार्थी अपने जीवन को अवश्य ही काफी ऊँचा उठा सकते है, तथा पारस्परिक वैमनस्य का निराकरण कर एक स्वस्थ सौहार्द्रपूर्ण वातावरण प्रतिष्ठित कर सकते हैं। जिसमें यहां के राष्ट्रनेताओं ने भारतीयो में आत्मविश्वास और स्वाभिमान जगाने का कार्य किया मालवीय जी लोक कल्याण के निमित्त वर्ण-भेद और वर्ग-भेद की कुरीतियों के प्रति आगाह किया, और सन् 1935 ई० में पूना में हिन्दू महासभा में स्पष्ट घोषणा की कि सार्वजनिक स्थानों से वर्ण-भेद और अस्पृश्यता समाप्त होनी ही चाहिए। उनकी मान्यता थी कि भेद की भावना न तो व्यक्ति को समुन्नत कर सकता है, न तो राष्ट्र को। उनके अनुसार धार्मिक मान्यतायें मानव कल्याण की भावना से प्रेरित है। इसलिए मानव कल्याण ही सच्चा धर्म है। जो भी धर्म इसमें सहायक हो वह सनातन धर्म है।

अत स्पष्ट होता है कि हम मालवीय जी के विचारों से प्रेरणा लेकर हिन्दू धर्म में नयी आशा की किरण खोज सकते हैं। यही धर्म जन संघर्ष को नयी दिशा प्रदान कर औद्योगिक सभ्यता में विकसित होने वाले समाज को एक नयी राह प्रदान कर सकता है।

## सन्दर्भ


1. अग्रवाल, सुबोध, भारतीय शिक्षा की समस्यायें तथा प्रवृत्तियाँ, उ.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ (1974)।
2. गुप्त, प्रो. एल.एन. एवं प्रो. मदन मोहन- महान भारतीय शिक्षाशास्त्री, कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद (2004-05)।
3. पाण्डेय, डॉ. श्रीधर एवं डॉ. लालजी पाण्डेय- विश्व के कुछ प्रमुख शिक्षा मनीषी एवं शिक्षा दर्शन, भवदीय प्रकाशन, अयोध्या (2005)।
4. चतुर्वेदी, सीताराम- आधुनिक भारत के निर्माता मदन मोहन मालवीय, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार (1995)।
5. तिवारी, उमेशदत्त- भारत भूषण महामना मदन मोहन मालवीय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1988)।
6. लाल, प्रो. मुकुट बिहारी- महामना मदन मोहन मालवीय के जीवन और नेतृत्व, मालवीय अध्ययन संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (1978)।
7. लाल, रमन बिहारी- शिक्षा के दार्शनिक व समाज शास्त्रीय आधार, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ (1991)।
8. वर्मा, डॉ. वैद्यनाथ प्रसाद- विश्व के महान् शिक्षा शास्त्री, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, बिहार (1972)।
9. त्रिपाठी, पं. रामनरेश- तीस दिन मालवीय जी के साथ, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली (1965)।
10. उपाध्याय, पं. रामजी- प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, भारतीय संस्कृति संस्थानम, वाराणसी (1965)।



**Corresponding Author**

**Vibha Mishra***

Research Scholar, Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan


www.ignited.in